२२ मार्च, २०२०
क्या तुमने सुना वायरस के बारे में?
क्या वो सब कुछ बंद कर देंगे?
फुल्लोबाई ४३ साल की एक गोंड महिला है जो लालगढ़ में सब्ज़ी बेचती है।
TV पर लॉकडाउन की घोषणा हुई है, बस्ती में अफ़रा-तफ़री मची है और सब चिंतित हैं।
फुल्लो, हम लॉकडाउन में कैसे कमाएँगे और खाएँगे?
फुल्लोबाई अपने पास बचे हुए पैसे गिनती है।
हमारे पास ४,००० रुपए हैं, लेकिन राशन तो क़रीब क़रीब ख़त्म हो गया है। वो हमें सब्ज़ी तो बेचने देंगे ना?
फुल्लो, तुम तो सब्ज़ी बेचने के लिए बाहर निकल पाओगी, लेकिन मैं अपना सिलाई का काम कैसे चलाऊँगी?
काम नहीं करेंगे तो मैं और साईबु क्या खाएँगे, दीदी?
साईबु फुल्लोबाई का पति है। वो पास के अपार्टमेंटों से कूड़ा उठाने का काम करता है।

२३ मार्च;
फुल्लो, आज कोई बस नहीं चल रहीं हैं, तू मेरी साइकल ले जा।
मैं दाई को बाज़ार ले जाता हूँ।
संजय फुल्लोबाई का १४-वर्षीय बेटा है।

दाई, जल्दी करो! इस तरफ़ चलते हैं। मुझे इस रास्ते पुलिस गाड़ी का साइरन सुनाई दे रहा है।
मैंने तो कभी भी सड़कें इतनी ख़ाली नहीं देखीं!

बाक़ी ठेले वाले भी यहाँ हैं। मंदिर और मस्जिद भी खुलें हैं।
सिर्फ़ बड़ी दुकानें बंद हैं।
फुल्लोबाई अपने कुछ साथियों को बाज़ार में देख कर थोड़ा आश्वस्त महसूस करती है

फुल्लोबाई पुलिस की गाड़ी को बाज़ार की तरफ़ आते हुए देखती है, गाड़ी मस्जिद के सामने रुकी हुई है। इस दौरान, मंदिर में आरती शुरू हो गयी है।

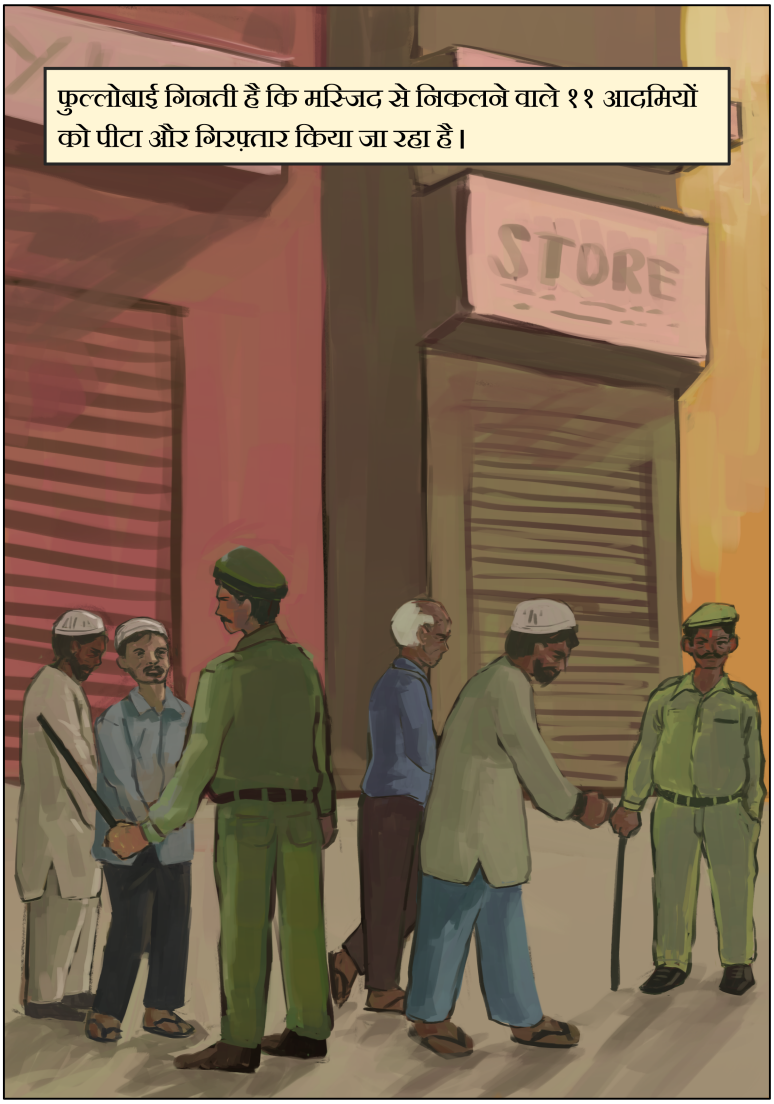
फुल्लोबाई गिनती है कि मस्जिद से निकलने वाले ११ आदमियों को पीटा और गिरफ़्तार किया जा रहा है।
STORE

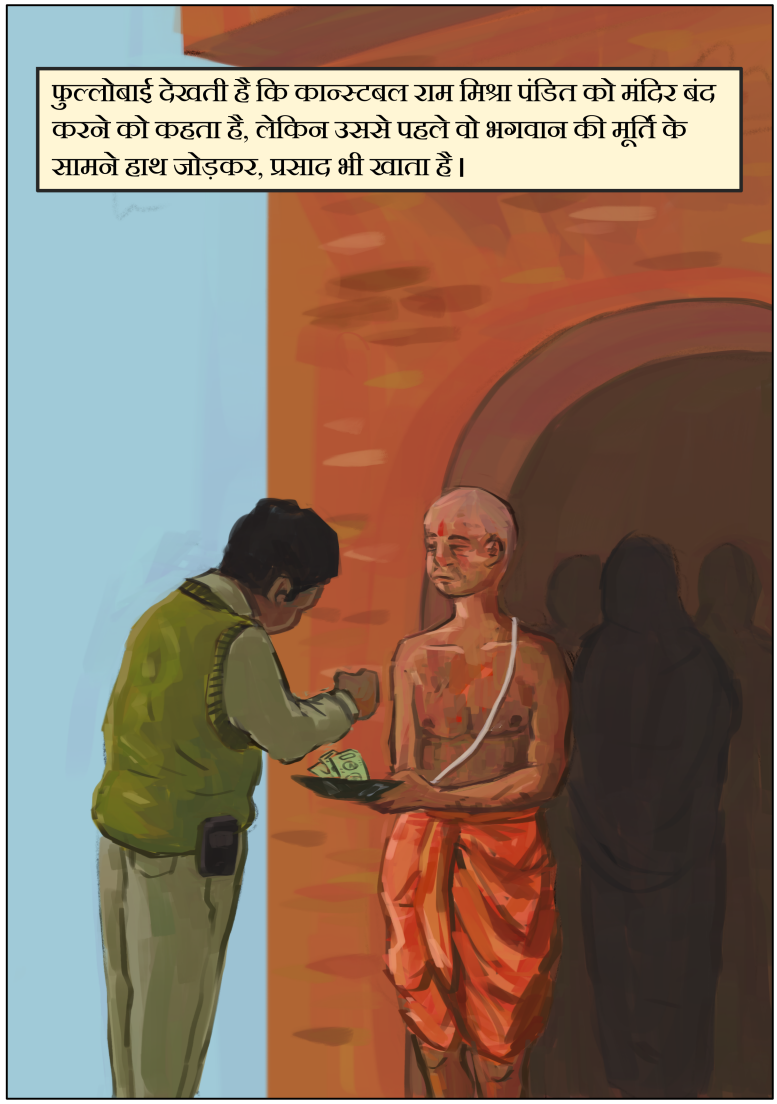
फुल्लोबाई देखती है कि कान्स्टबल राम मिश्रा पंडित को मंदिर बंद करने को कहता है, लेकिन उससे पहले वो भगवान की मूर्ति के सामने हाथ जोड़कर, प्रसाद भी खाता है।

मंदिर के किसी को नहीं पकड़ा!
दाई, मंदिर में पूजा करना कोई ग़लत थोड़ी है। और ऊपर से, मस्जिद में ज़्यादा लोग थे।

मस्जिद से गिरफ़्तार किए जाने वाले लोग पुलिस के हाथ-पाँव जोड़ रहे हैं कि उनको छोड़ दिया जाए। पुलिस वाले उनको लॉकडाउन के नियमों का उल्लंघन करने के लिए डाँट रहे हैं।

बाज़ार में और पुलिस वाले पहुँच गए हैं, और माँस-बेचने वालों और सड़क पे खड़े ठेले वालों के पीछे भाग रहे हैं।

हमने पहले ही उल्लंघन करने वालों को भर भर के जेल के अंदर कर दिया है।

भागो यहाँ से, नहीं तो डंडा लगाके हवालात ले जाएँगे।

जैसे ही फुल्लोबाई और संजय अपनी सब्ज़ियाँ बाँधने लगे, पुलिस वाले अकरम के ऊपर टूट पड़ते हैं। अकरम माँस बेचता है।

मुझे क्यूँ गिरफ़्तार कर रहे हैं साहब?

माँस तो क़ानून के हिसाब से आवश्यक वस्तुओं में आता है!

MEAT

कलेक्टर ने कहा है कि आवश्यक वस्तुओं की सिर्फ़ होम-डिलीवरी को अनुमति है।

मैं कैसे होम-डिलीवरी कर पाऊँगा?!

साहब, माल छोड़ दीजिए।

*हम अभी जा रहे हैं!*

फुल्लोबाई की सब्ज़ियों को एक कान्स्टबल तहस-नहस करने लगता है।

तुमको गिरफ़्तार कर रहे हैं! क्या कारण है तुम्हारा लॉकडाउन का उल्लंघन करने के लिए?
जाने दीजिए इसको साब, हम लोग बस निकल ही रहे हैं।
**मुँह बंद करो**, तुमको चेतावनी देकर छोड़ रहे हैं।

तुम लोग कभी नियम का पालन नहीं करते!
हमको तुम्हारी सुरक्षा के लिए काम करना पड़ता है, वाइरस के टाइम में भी!

कैसी सुरक्षा?! पुलिस की हिंसा से कौन सुरक्षित है?

फुल्लोबाई देखती है कि उमाकांत, टेंट की दुकान वाले, को भी चेतावनी देकर छोड़ दिया गया है।
तुम आवश्यक वस्तु सूची में कैसे हो?

भाग्यशाली रहा शायद।
हम तुमको चेतावनी देकर छोड़ रहे हैं। ये पर्ची रखो, ये तुम्हारा नोटिस है।

फुल्लोबाई पुलिस वालों को मेन रोड पर लोगों की तलाशी लेते देखती है। कुछ को रोका जा रहा है, और कुछ को नहीं।
ये पुलिस कैसे तय कर रही है?
STORE

पुलिस सभी गिरफ़्तार लोगों को गाड़ी में भर के चली जाती है।
वो संजय को कहाँ ले जा रहे हैं?! इस नोटिस का क्या मतलब है?

फुल्लोबाई पास के पुलिस स्टेशन जाती है, ये ढूँढने कि कहीं संजय वहाँ तो नहीं।
पुलिस ने तो आज की सारी सब्ज़ी ख़राब कर दी। सिर्फ़ ४,००० रुपए में मैं संजय को कैसे छुड़ाऊँगी?

फुल्लोबाई को नाके पे पुलिस वाले रोकते हैं।

साब, मैं अपने माँ-बाप की दवाइयाँ ख़रीदने बाहर आया हूँ। प्लीज़ साब, मुझे जाने दो।

सर जी, मेरा पति मुझे हर दिन ***पीटता*** है। मुझे अपने मायके जाना है दूसरे ज़िले में, नहीं तो मैं लॉकडाउन में ज़िंदा नहीं बचूँगी।

पुलिस वाले दवाई ख़रीदने निकले आदमी और पति के घर से जा रही महिला को नोटिस जारी करते हैं।

तुम बाहर क्यूँ हो और मास्क क्यूँ नहीं पहने हो?

हम लॉकडाउन में हालात देखना चाहते थे।

पुलिस वाले इन घूमते लड़कों को भी नोटिस जारी करते हैं।

फुल्लोबाई देखती है कि एक होण्डा गाड़ी को कोई नहीं रोकता।

गाड़ी जाने दो, वो राशन ला रहे हैं!

सीधा घर पहुँचो अब, यहाँ वहाँ घूमना मत!

पुलिस वाले फुल्लोबाई से सवाल पूछते हैं और वो उन्हें नोटिस की पर्ची दिखाती है।

मेरे बेटे को पकड़ लिया है। कृपया करो, मुझे पुलिस स्टेशन जाना है।

जिन जिनको नोटिस जारी किया है, पुलिस वाले उन्हें सज़ा देने के लिए उठक-बैठक करवा रहे हैं।

तुम में से किसी के पास कोई संतोषजनक कारण नहीं है लॉकडाउन तोड़ने का। घर पर रहो!

फुल्लोबाई पास के पुलिस स्टेशन पहुँचती है

***बाहर निकलो!*** तुम्हारा बेटा यहाँ नहीं है और लॉकडाउन लगा हुआ है, घर जाओ!

स्टेशन के बाहर, कुछ कान्स्टबल हाथ धोने पर एक नाच वीडियो बना रहे हैं।

एक और टेक, आख़िर के कुछ सेकंड थोड़े साफ़ नहीं आए।

परेशान और हार के, फुल्लोबाई घर वापिस लौट आयी
संजय कहाँ है?
उसको गिरफ़्तार कर लिया।
बस्ती में भी आकर पुलिस ने लोगों को पकड़ा है

साईबु फुल्लोबाई को बताता है कि पुलिस ने बस्ती में आकर पारधी लोगों के घर पर छापे मारे, महुआ की तलाशी लेने। महुआ एक पारम्परिक शराब है जो पारधी अपने घर चलाने के लिए बनाते आए हैं।
सर, मैंने दारू बेचना २ महीने पहले ही बंद कर दिया था!

पुलिस ने पत्ते खेलते हुए आदमियों को भी जुआ अधिनियम के अंदर गिरफ़्तार कर लिया।
जो भी अपने घर से या बस्ती से बाहर निकलेगा उसको पकड़ लेंगे हम!

रो मत फुल्लो, आख़िर संजय है तो गोंडी। हमारे समाज वालों के साथ ऐसा होता ही है। मुझे भी तो ऐसे ही बेवजह गिरफ़्तार किया था, पर मैं हूँ ना यहीं। वह ठीक रहेगा।

***आदिवासियों*** की क़िस्मत इतनी ख़राब क्यूँ है? पुलिस हमारी बस्ती को क्यूँ निशाना बनाती है? मैं अपने बेटे को कैसे छुड़ाऊँगी?

पुलिस के हिसाब से, लॉकडाउन में बाहर निकलने का ***संतोषजनक*** कारण क्या है? क्या हम काम करके अपने परिवार का पेट ना भरें?

२० मई, २०२०
अकरम अभी तक नहीं आया वापिस?
शायद अभी भी जेल में है, फुल्लोबाई के बेटे के साथ।
लॉकडाउन हटने के बाद फुल्लोबाई फिर से बाज़ार आती है

अच्छा रहेगा अगर हम सब आज इतनी बिक्री करलें कि हमारे परिवार एक बार पेट भर खा पाएँ कल।
फुल्लोबाई अभी भी हाथ में नोटिस की पर्ची लिए है, बिना जाने कि उसका मतलब क्या है।